REVIEW ARTICLE Bhartiya Krishi Anusandhan Patrika, Volume 38 Issue 4: 314-319 (December 2023)

महाराष्ट्र राज्य में पाए जाने वाले देशी मवेशियों का फेनोटाइपिक विवरणः एक समीक्षा

ऐश्वर्या दास[1], संजीव सिंह[2]

सारांश

भारत लगभग 535.78 मिलियन पशुओं के साथ दुनिया के सबसे बड़े और सबसे विविध पशुधन में समृद्ध है। भारत में मवेशी एक प्रमुख पशुधन प्रजाति है, जो कुल पशुधन आबादी का लगभग 36% है। 20वीं पशुधन जनगणना के अनुसार, महाराष्ट्र में 13.99 मिलियन मवेशी हैं, जिनमें से 9.38 मिलियन स्वदेशी और 4.60 मिलियन विदेशी और क्रॉसब्रेड मवेशी हैं। वार्षिक वर्षा, मिट्टी के प्रकार, वनस्पति और फसल पैटर्न के आधार पर महाराष्ट्र को नौ कृषि–जलवायु क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। इस जलवायु विविधता के कारण, स्थानीय मांग के अनुसार विभिन्न मवेशियों की आबादी विकसित की गई है। कुल 53 पंजीकृत मवेशी नस्लों में से 7 नस्लें अर्थात् डांगी, गौलाओ, खिल्लर, लाल कंधारी, देवनी, कोंकण कपिला और कथानी महाराष्ट्र में पाई जाती हैं। ये नस्लें आम तौर पर भारवाहक प्रकार की होती हैं और इनका उपयोग परिवहन और कृषि के लिए किया जा सकता है। अन्य मवेशियों की आबादी (नॉनडिस्क्रिप्ट) राज्य के कुल मवेशियों का लगभग 67% है और महाराष्ट्र भारत की कुल नॉनडिस्क्रिप्ट मवेशी आबादी में 5वें स्थान पर है। स्वदेशी पशुधन हमारे देश की प्रतिकूल परिस्थितियों के अनुकूल है और विभिन्न रोगों के प्रति प्रतिरोधी है। इसलिए, इस अज्ञात आबादी की पहचान, लक्षण वर्णन, मूल्यांकन और दस्तावेजीकरण की तत्काल आवश्यकता है। इसके अलावा, नस्लों और आबादियों के लिए उपयुक्त प्रजनन और संरक्षण रणनीति विकसित करने के लिए इन आबादियों के मिश्रण स्तर का अध्ययन किया जाना चाहिए।

मुख्य शब्दः नस्ल, मवेशी, गैर–वर्णित जनसंख्या।

Phenotypic Description of the Native Cattle Found in Maharashtra State: A Review

Aishwarya Dash[1], Sanjeev Singh[2]

10.18805/BKAP665

ABSTRACT

India is rich in the world's largest and most diverse livestock with about 535.78 million animals. Cattle is a major livestock species in India comprising nearly 36% of the total livestock population. According to 20th livestock census, Maharashtra comprises 13.99 million cattle population, out of which 9.38 million are indigenous and 4.60 million are exotic and crossbred cattle. Maharashtra is divided into nine agro-climatic zones on the basis of annual rainfall, soil type, vegetation and cropping pattern. Due to this climatic diversity, different cattle populations have been developed according to the local demand. Out of total 53 registered cattle breeds, 7 breeds *viz*., Dangi, Gaolao, Khillar, Red Kandhari, Deoni, Konkan Kapila and Kathani are found in Maharashtra. These breeds are generally draft type and can be used for transport and agriculture. Other cattle populations (nondescript) consist of nearly 67% of the total cattle of the state and Maharashtra ranks 5th position in total nondescript cattle population of India. Indigenous livestock is adapted to the adverse conditions of our country and is resistant to various diseases. Hence, there is an urgent need for identification, characterization, evaluation and documentation of the nondescript populations. Further, admixture level of these populations should be studied for developing suitable breeding and conservation strategies for the breeds and/ populations.

Key words: Breed, Cattle, Nondescript population.

भारत वर्ष लगभग 535.78 मिलियन प्राणियों के साथ दुनिया का सबसे अधिक और विविध पशुधन में समृद्ध है। गोवंश कुल पशुधन आबादी का लगभग 36% है। पशुगणना 2019 के अनुसार भारत में 193.46 मिलियन गोवंश है, जिनमें से 142.11 मिलियन देशी तथा 51.36 मिलियन विदेशी व संकर गोवंश है। उसमें से लगभग 100.22 मिलियन (लगभग 51.80%) गोवंश गैर–विवरणित है। अब तक राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो द्वारा 53 भारतीय गौ नस्लें पंजीकृत हैं। कुल 7 नस्लें डांगी, गाओलाओ, खिल्लार, रेड कंधारी, देओनी, कोंकण कपिला

[1]Division of Animal Genetics and Breeding, ICAR-National Dairy Research Institute, Karnal-132 001, Haryana, India.
[2]Division of Animal Genetics, ICAR-National Bureau of Animal Genetics and Resources, Karnal-132 001, Haryana, India.

Corresponding Author: Sanjeev Singh, Division of Animal Genetics, ICAR-National Bureau of Animal Genetics and Resources, Karnal-132 001, Haryana, India. Email: sssanjeev197@gmail.com

How to cite this article: Dash, A. and Singh, S. (2023). Phenotypic Description of the Native Cattle Found in Maharashtra State: A Review. Bhartiya Krishi Anusandhan Patrika. 38(4): 314-319. doi: 10.18805/BKAP665.

Submitted: 21-07-2023 **Accepted:** 03-01-2024 **Online:** 19-01-2024

तथा कथानी महाराष्ट्र में पाई जातीं हैं। महाराष्ट्र में 20वीं पशुगणना के अनुसार 13.99 मिलियन गोवंश हैं, जिनमें से 9.38 मिलियन देशी तथा 4.60 मिलियन विदेशी व संकर गोवंश है (चित्र 1)। इनमें से भी 8.02 मिलियन देशी गायों का गुण निर्धारण होना बाकी है। भारत में गैर–वर्णित मवेशियों की आबादी में महाराष्ट्र पांचवे स्थान पर है। जीनोमिक संरचना, अनुवांशिक विभेदन और गैर–वर्णित जनसंख्या स्तरीकरण पर जानकारी की कमी के कारण गैर–वर्णित गायों में सुधार चुनौतीपूर्ण है। इसलिए, गैर–वर्णित आबादी की पहचान, लक्षण वर्णन, मूल्यांकन, प्रलेखन और संरक्षण की तत्काल आवश्यकता है। भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् ने 11 अगस्त 2021 को मिशन जीरो नॉन–डेस्क्रिप्ट (मिशन शून्य गैर–विवरणित) की शुरुआत की जिस के तहत समस्त गैर–विवरणित पशुधन का नामकरण व गुण निर्धारण सुनिश्चित किया जाना है।

महाराष्ट्र का पर्यावरण सम्बंधी परिचय

महाराष्ट्र को वार्षिक वर्षा, मिट्टी के प्रकार, वनस्पति और फसल पद्धति के आधार पर नौ कृषि जलवायु क्षेत्रों में विभाजित किया गया है: दक्षिण कोंकण, उत्तर कोंकण, पश्चिमी घाट क्षेत्र, उप पर्वतीय क्षेत्र, पश्चिमी महाराष्ट्र समतल क्षेत्र, पश्चिमी महाराष्ट्र अपर्याप्त क्षेत्र, मध्य महाराष्ट्र पठारी क्षेत्र, मध्य विदर्भ क्षेत्र तथा पूर्वी विदर्भ क्षेत्र। महाराष्ट्र का क्षेत्रफल 307,713 वर्ग किमी है जो की बड़े आकार और विविध स्थलाकृति का है। राज्य में पूर्वी महाराष्ट्र क्षेत्र में 500 मिमी से लेकर घाट क्षेत्र में 4000 मिमी तक वर्षा होती है। हालांकि तापमान बहुत अधिक नहीं है, लेकिन यह फसल उत्पादन और सौर विकिरण के लिए सीमित कारक भी नहीं है। उच्च क्षेत्रों में लाल या हल्के भूरे रंग की मिट्टी, तटीय क्षेत्र में लेटराइट मिट्टी से लेकर पठार क्षेत्र में अलग–अलग गहराई तक काली मिट्टी पाई जाती है। चावल, दालें, ज्वार और तिलहन पूर्वी विदर्भ के उच्च वर्षा क्षेत्र की महत्वपूर्ण फसलें हैं। केंद्रीय मध्यम वर्षा विदर्भ में फसल पैटर्न में कपास ज्वार, दालें, गेहूं और तिलहन शामिल हैं। केंद्रीय पठार में ज्वार सबसे महत्वपूर्ण फसल है, हालांकि कपास, तिलहन, बाजरा, मूंगफली, दालें और गन्ना भी काफी क्षेत्रों पर उगाई जाती हैं। जलवायु में विविधता के कारण वहाँ के स्थानीय पशुओं में भी विविधिता पाई जाती है, जिससे पशुओं की अलग–अलग नस्लों का स्थानीय माँग के अनुसार विकास हुआ है।

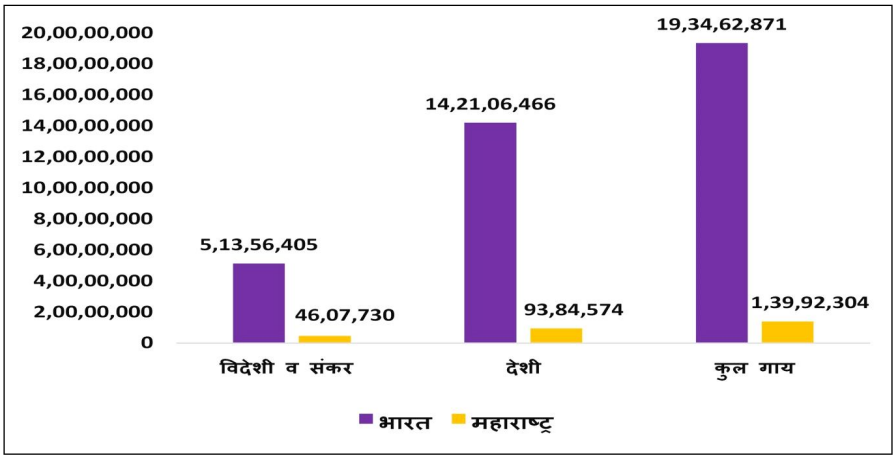
महाराष्ट्र की विभिन्न गायों की आबादी से, गैर–विवरणीय गोवंश का संख्या लगभग 57% तथा पंजीकृत देशी नस्ल लगभग 10% है। विदेशी/संकर गायें लगभग 33% है। गैर–वर्णित गाय कुल देशी आबादी का लगभग 86% है (चित्र 2)।

महाराष्ट्र का पंजीकृत गोवंश

महाराष्ट्र में गाय की 7 पंजीकृत नस्लें जैसे डांगी, गाओलाओ, खिल्लार, रेड कंधारी, देओनी, कोंकण कपिला तथा कथानी देखी जातीं हैं। 31 अगस्त, 2022 को हुई बैठक में नस्ल पंजीकरण समिति द्वारा कथानी को एक नई गोवंश नस्ल के रूप में पंजीकृत किया गया है। पशुधन नस्ल सर्वेक्षण (2019) के अनुसार महाराष्ट्र में पंजीकृत नस्लों के प्रतिशत को चित्र 3 में दर्शाया गया है।

डांगी

डांगी महाराष्ट्र राज्य के पश्चिमी घाट क्षेत्र के नासिक, अहमदनगर और पालघर जिले और गुजरात के डांग जिले में वितरित हैं। यह नस्ल भारी वर्षा वाले क्षेत्रों और पहाड़ी इलाकों में अपने उत्कृष्ट कार्य गुणों के लिए जानी जाती है। इन गायों का उपयोग आमतौर पर भार ढोने और जुताई जैसे कृषि संबंधी कार्यों के लिए किया जाता है। डांगी नस्ल मध्यम आकार की

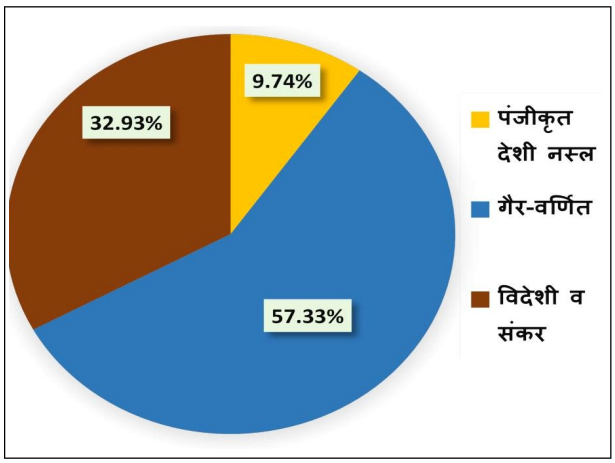


चित्र 1: महाराष्ट्र और भारत की देशी, विदेशी व संकर गायों की आबादी (20वीं पशुगणना)।

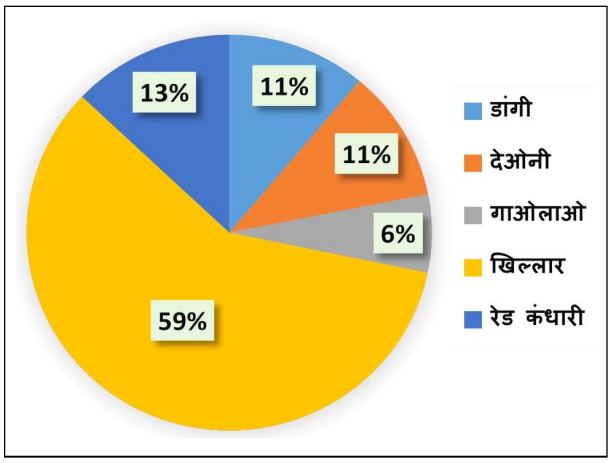
होती हैं और माथा थोड़ा फैला हुआ होता है। इनका शरीर सफेद रंग का होता है, जिसमें लाल या काले धब्बे पाये जाते हैं। सींग छोटे, नुकीले और आधा चाँद के आकार के साथ मोटे भी होते हैं। ज्यादातर सींग अंदर की ओर तथा नीचे की ओर इंगित करते हुए होते हैं। साधारणतः यह नस्ल अपनी कठोरता और अनुकूलन क्षमता के लिए जानी जाती है।

गाओलाओ

यह गोवंश मध्य प्रदेश के बालाघाट, छिंदवाड़ा, सिवनी, दुर्ग और राजनांदगांव जिलों और महाराष्ट्र के वर्धा और नागपुर जिलों में पाया जाता है। नर पशु काला–सफेद रंग के होते हैं और आमतौर पर गर्दन के ऊपर भूरा रंग पाया जाता है तथा मादा पशु का शरीर सफेद रंग का होता है। इसका सिर लंबा–संकीर्ण और माथा थोड़ा उत्तल होता है। सींग छोटे, गठीले और टेढ़े होते हैं। यह नस्ल अर्ध गहन प्रणाली में पाली जाती है। यह



चित्र 2: महाराष्ट्र के गोवंश का प्रतिशत (20वां नस्ल सर्वेक्षण)।



चित्र 3: महाराष्ट्र गाय की नस्लें (20वें पशुधन नस्ल सर्वेक्षण के दौरान कोंकण कपिला और कथानी पंजीकृत नहीं थे)।

तेजी से दौडने वाली नस्ल है, जो पहाड़ी इलाकों में परिवहन के लिए उपयुक्त होती है।

खिल्लार

यह नस्ल महाराष्ट्र के पुणे, सतारा, सांगली, सोलापुर, कोल्हापुर, उस्मानाबाद और कर्नाटक के बेलगाम, बीजापुर, धारवाड़, गुलबर्गा बागलकोट जिलों में पाई जाती है। इसकी उत्पत्ति हल्लीकर या अमृतमहल नस्ल के गोवंश से हुई है। डेक्कन् पठार के खिलारी धूसर–सफेद होते हैं जबकि ताप्ती खिलारी सफेद रंग के होते हैं। सींग लंबे, नुकीले और धनुष आकार के होते हैं और माथे के पीछे की ओर झुकते हुए होते हैं। नाक का पुल (नेजल ब्रीज) नुकीला और उन्नत होता है। बैलों को तेज शक्तिशाली और भार–वाही पशुओं के रूप में जाना जाता है और यह बिना थकान के मीलों की यात्रा कर सकते हैं।

रेड कंधारी

महाराष्ट्र के अहमदनगर, परभणी, बीड, नांदेड़, लातूर जिलों में रेड कंधारी वितरित हैं। इसका रंग ज्यादातर गहरे लाल रंग का होता है लेकिन हल्के लाल से लेकर लगभग भूरे रंग के रूपांतर भी पाए जाते हैं। बैल आमतौर पर गायों की तुलना में गहरे रंग के होते हैं। सींग समान रूप से टेढ़े और मध्यम आकार के होते हैं। इसे व्यापक प्रबंधन प्रणाली के तहत पाला जाता है। लाल कंधारी गाय तुलनात्मक रूप से कम दूध उत्पादक होती हैं लेकिन उच्च प्रजनन क्षमता वाली होती हैं। बैल की राजसी चाल होती है। इस नस्ल का उपयोग मुख्यतः भारवहन और परिवहन के लिए किया जाता है।

देओनी

देओनी नस्ल को डांगरी के नाम से भी जाना जाता है। ऐसा माना जाता है कि इसे गिर, दांगी और स्थानीय गायों के मिश्रण से विकसित किया गया है। इसका प्रजनन क्षेत्र सह्याद्री पहाड़ियों की बालाघाट श्रेणी में स्थित है। यह मुख्य रूप से महाराष्ट्र के नांदेड़, उस्मानाबाद और लातूर जिलों में पाया जाता है। शरीर का रंग आमतौर पर काला और सफेद धब्बेदार होता है। इस नस्ल के तीन उपभेद हैं; पूर्ण श्वेत (बालंक्य), सफेद रंग और आंशिक काले चेहरे (वन्नेरा) एवं काले और सफेद धब्बेदार (वाघीड या शेवेरा) पाए जाते हैं। इसके कान झुके हुए और माथा प्रमुख और थोड़ा उभरा हुआ होता है। सींग का आकार छोटा और भोथरा होता है। इसका प्रबंधन अर्ध–गहन प्रणाली के तहत किया जाता है। देओनी बैलों को भारी काम और परिवहन के लिए उपयोग में लाया जाता है।



डांगी



गाओलाओ



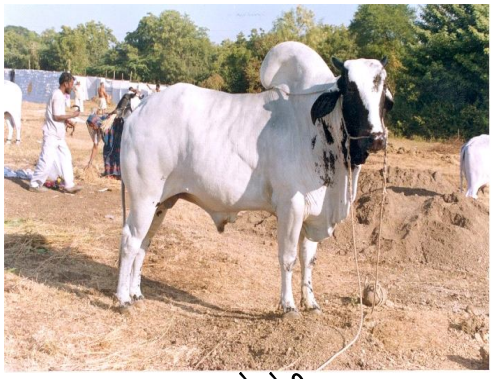
खिल्लार



रेड कंधारी



कोंकण कपिला



देओनी



कथनी



खामगाँव गाय

कोंकण कपिला

यह गोवंश महाराष्ट्र के थाने, रायगढ़, रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग और पालघर क्षेत्रों में पाया जाता है। कोंकण कपिला विभिन्न रंगों के होते हैं, लाल भूरे से लेकर काला, सफेद/धूसर, मिश्रित या हलके पीले रंग के जानवर भी उपलब्ध हैं। यह कम निवेश उत्पादन प्रणाली में अच्छी तरह से अनुकूलित और चराई पर जीवित रहते हैं। यह बिना थकान के ढलान वाले वन क्षेत्रों में भी चर सकते हैं। जानवरों में उच्च स्तर की गर्मी सहनशीलता होती है। इसका छोटे से मध्यम आकार का शरीर, क्षैतिज कान और सीधे माथे के साथ सींग सीधे और नुकीले होते हैं। इस नस्ल का दुग्ध उत्पादन लगभग 2.25 किलोग्राम/दिन होता है। इसका उपयोग भारवहन, दूध और खाद के लिए किया जाता है। पहाड़ी इलाकों और अपने मूल क्षेत्र की गर्म और आर्द्र जलवायु के अनुकूल यह अच्छी कर्षण क्षमता रखते हैं और छोटे और सीमांत किसानों की जीविका में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

कथानी

कथानी महाराष्ट्र के गढ़चिरौली, चंद्रपुर और गोंदिया जिलों में पाई जाती है। यह आकार में मध्यम और कम वजन के होते हैं। इस नस्ल में तीन अलग–अलग रंग के जानवर जैसे सफेद, काला और लाल पाए जाते हैं। इसमें सीधे और मुड़े हुए दोनों प्रकार के सींग पाए जाते हैं। यह अपनी कठोर प्रकृति और कठोर जलवायु परिस्थितियों में काम करने की क्षमता के लिए जाने जाते हैं। इनका उपयोग कृषि कार्यों में किया जाता है और धान के खेतों की दलदली भूमि में काम करने के लिए सबसे उपयुक्त हैं।

महाराष्ट्र की गैर–वर्णित गाय

महाराष्ट्र में लगभग 57% गायों का नस्ल निर्धारण तथा प्रलेखन नहीं हुआ है। कुछ गैर–विवरणित गायों का वर्णन नीचे किया गया है।

खामगाँव गाय

यह आबादी महाराष्ट्र के बुलढाणा जिले (खामगाँव और आसपास की तहसीलों) में पाई जाती है। इसका सामान्य रंग सफेद चिह्नों या धब्बों के साथ मिश्रित लाल रंग का होता है जो इसे धब्बेदार रूप देता है। यह मध्यम से बड़े आकार का पशु होता है। इसके सींग मध्यम लंबाई के होते हैं और आधार पर मोटे होते हैं। वे लगभग सीधे माथे की रेखा में बढ़ते हैं। माथा चौड़ा और थोड़ा उत्तल होता है। इसे अर्ध–गहन (सेमी–इंटेंसिव) प्रबंधन प्रणाली के तहत पाला जाता है। इसका दूध उत्पादन 2–4 लीटर/दिन होता है। मुख्य रूप से इसके बैल कृषि सम्बंधित कार्यों में प्रयोग में लाये जाते हैं।

उमरदा गाय

यह मवेशी मूल रूप से मध्यम आकार की देशी गाय हैं जो यवतमाल जिले के दिगरास, दर्वा और पुसद तहसीलों और महाराष्ट्र के पश्चिमी विदर्भ क्षेत्र के आस–पास के क्षेत्रों में पाए जाते हैं। उमरदा नाम पास के वाशिम जिले के स्थानीय मवेशी बाजार ''उमबरदा बाजार'' से लिया गया है, हालांकि स्थानीय रूप से ये जानवर "दिग्रस" (गाँव) या ''बंजारा'' (समुदाय) के नाम से लोकप्रिय हैं। शरीर का रंग मुख्यतः सफेद होता है, यद्दपि लाल रंग भी देखा जाता है। यह मध्यम आकार का पशु होता है। इसका चौड़े और थोड़े अवतल माथे होते है, जिसमें मध्यम आकार के सींग पाए जाते हैं। छोटी और मोटी गर्दन, छोटे गलकंबल और साधारण आकार के कूबड़ होते हैं। थूथन चौड़े और गहरे रंग के होते हैं। दैनिक दूध उत्पादन लगभग 2–3 लीटर होता है। इसके बैल कृषि पद्धतियों के लिए अच्छे होते हैं।

पहाड़ी गाय

यह आबादी महाराष्ट्र के यवतमाल जिले की दिग्रास तहसील के सखारा, तिवारी, रामगाँव, मोख –2, लेगवाहन गाँव, दर्वा



उमरदा



पहाड़ी

तहसील के पिंपरी खुर्द, भांडेगाँव और चिखली गाँव और मेलघाट क्षेत्र के धरनी तालुका में, सतपुड़ा पर्वतमाला के पहाड़ी क्षेत्र में पायी जाता है। यह ''पहाड़ी'', मेलघाटी या ''धरनी'' के नाम से लोकप्रिय है। शरीर का रंग सफेद, लाल या धूसर होता है। माथा सीधा, थूथन काला और सींग काले और छोटे आकार के होते हैं। गलकंबल और कूबड़ छोटे होते हैं। पहाड़ी गाय स्थानीय आदिवासी समुदायों द्वारा अर्ध गहन प्रणाली में पाली जाता है और यह पशु ऊंचाई वाले क्षेत्रों के लिए अच्छी तरह अनुकूलित होते हैं । थन छोटा होता है और गाय प्रति दिन केवल 1–2 किलो दूध देती है।

निष्कर्ष

महाराष्ट्र का आधे से अधिक गोवंश गैर–वर्णित प्रकार का है। यह पशुधन हमारे देश की प्रतिकूल परिस्थितियों के अनुकूल है और विभिन्न रोगों के लिए प्रतिरोधी है। इस गैर–वर्णित आबादी की पहचान, लक्षण वर्णन, मूल्यांकन और प्रलेखन की आवश्यकता है, ताकि यह विविधता और विशेषता का वर्णन करने में सहायक हो तथा देशी गोवंश में मिश्रण स्तर का पता लगाना भी महत्वपूर्ण है। हमारी स्वदेशी आबादी की पहचान करने के साथ–साथ पंजीकरण करना हमारी नस्लों के संरक्षण के लिए एक प्राथमिक कदम है। अन्यथा संभावना है कि हमारी यह विशेष आबादी जल्द ही विलुप्त हो सकती है।

REFERENCES

20th Livestock Census, (2019). Department of Animal Husbandry and Dairying, Ministry of Fisheries, Animal Husbandry and Dairying, Government of India.

Kathni, G. (2020). A bovine genetic resource from the Vidarbha Region of Maharashtra. National Bureau of Animal Genetic Resources.

Livestock and Poultry Breed Report (20th Livestock Census), Animal Husbandry Statistics Division, Department of Animal Husbandry and Dairying, Ministry of Fisheries, Animal Husbandry and Dairying, Government of India.

Indian Animal Genetic Resources, ICAR-National Bureau of Animal Genetic Resources.